

बाल-कवितावली

83



न्यालय
वाराणसी-५

हरिऔध

34



४



बाल-कवितावली

ख २४४



लेखक—

साहित्य-वाचस्पति, कवि-सम्राट्,
स्व० पं० अयोध्यासिंहजी उपाध्याय
'श्री "हरिऔध" जी'



प्रकाशक—

हिन्दी - साहित्य - कुटीर
वाराणसी - १

R 15 P 00

प्रकाशक.

द्वारकादास

हिंदी-साहित्य-कुटीर,

हाथीगली, वाराणसी-१

154

V. C. Sharma

द्वितीय संस्करण

एक हजार प्रतियाँ

वि० संवत् २०१८

२३-३-१८

Rs 15.00 P 00

मुद्रक :—

के० कृ० पावगी,

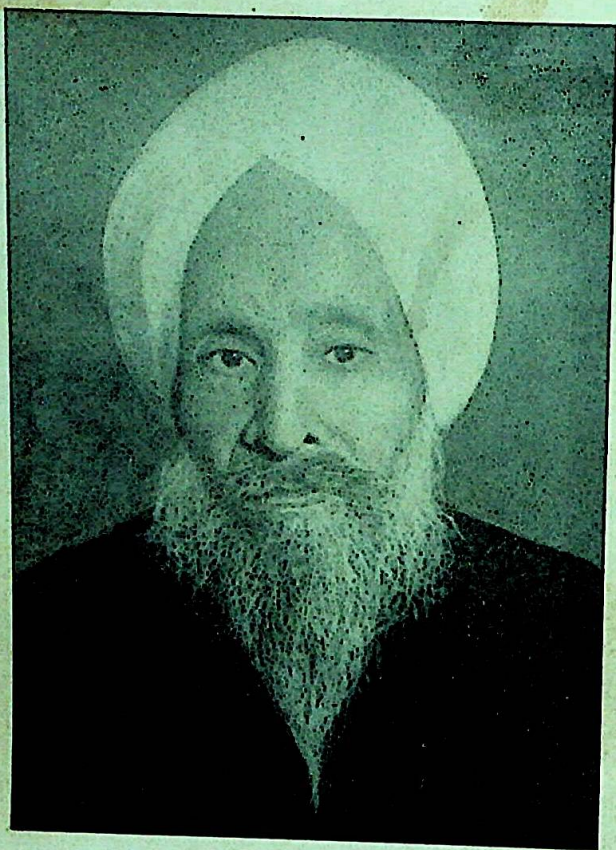
हितचिन्तक प्रेस,

रामघाट, वाराणसी-१

आर्य समाज - मन्थालय,

वाराणसी, उ० प्र०

वाराणसी-५



ग्रन्थकार

साहित्यवाचस्पति, साहित्यरत्न, कविसम्राट्
स्व० पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

भूमिका

खड़ी बोली की कविता का आरम्भ काल था, गद्य में तो उसका प्रचार सफलता के साथ हो रहा था परन्तु पद्य रचना में उसका मार्ग अब तक निष्कण्टक नहीं हुआ था फिर भी धीरे-धीरे वह अग्रसर हो रही थी। इधर हिन्दी की पाठशालाओं और स्कूलों में ऐसी पुस्तक की आवश्यकता हुई कि जिस की भाषा सरल हो और जिसमें गद्य पद्य दोनों की भाषा एक हो। पद्य की आवश्यकता की पूर्ति के लिये सब से पहले पृथ्वी उपाध्याय जी आगे आये और उन्होंने बालक सम्बन्धिनी अधिकांश कवितायें लिखीं। इस प्रकार की उनकी आज तक की कविताओं का संग्रह यह ग्रंथ है।

वात्सल्य रस को कुछ लोगों ने प्रधान रस माना है और नव रस के उपरान्त इसको दसवाँ स्थान दिया। कुछ आचार्यों ने इसको शृङ्गार रस के अन्तर्गत माना है, जो हो इस छोटी सी भूमिका में मैं इस विवाद में नहीं पड़ना चाहता परन्तु यह मैं कहूँगा कि वात्सल्य रस हृदयग्राहिता के विचार से अपना प्रधान स्थान अवश्य रखता है, कारण यह है कि बाल लीलायें यदि मर्मस्पर्शिणी हैं और वे विमुरब्ध कर सकती हैं तो उनके वर्णन में उसका सर्वोद्भूत

ख

होना और लोगोंको अपनी ओर आकर्षित करना आश्चर्यजनक नहीं होगा। जो मर्मज्ञ हैं वे इस विषय को यथातथ्य समझ सकेंगे इस लिये इस विषय पर अधिक लिखने की आवश्यकता मैं नहीं समझता।

हिन्दी साहित्य संसार पर दृष्टि डालने से दो सर्वमान्य ऐसे महाकवि हमारे सामने आते हैं जिन्होंने वात्सल्य रस पर सफलता के साथ लेखनी की परिचालना की है। पहले हैं महाकवि सूरदास और दूसरे महात्मा तुलसीदास। वात्सल्य रस की रचनायें सूरदास जी की बहुत अधिक हैं और वह प्रचलित भी हैं। किन्तु जिन्होंने गोस्वामी तुलसीदास जी की कृष्ण गीतावली नहीं देखी है वे यह नहीं जानते कि गोस्वामी जी ने वात्सल्य रस की रचना में भी वही प्रतिष्ठा प्राप्त की है जैसी अन्य रस की रचनाओं में। वास्तव में बात यह है कि इस रस पर सफलता से लेखनी चला कर कीर्ति अर्जन करना साधारण बात नहीं है। शृङ्गार रस की रचनायें यदि अधिक मिलती हैं तो उसका कारण यह है कि हिन्दी साहित्य संसार का ऐसा कौन कवि है जिसने इस रस पर लेखनी नहीं चलाई अतएव आदर्श उपस्थित रहने पर अनुकरण में बाधा नहीं पड़ती। स्वयं उद्भावना करना सबका काम नहीं, यह विशेषता महाकवि में ही पाई जाती है, किन्तु अनुकरण करना सुगम है और इस सुगमता से लाभ उठाने वालों की संख्या ही हिन्दी संसार में अधिक है और यही कारण है कि वात्सल्य रस की रचना सर्व सुलभ नहीं है।

ग

पूज्य उपाध्याय जी नवरस सिद्ध महाकवि हैं। प्रत्येक रस में उन्होंने आचार्यत्व दिखलाया है। जो मैं कह रहा हूँ उसमें यदि किसी को संदेह है तो वे कष्ट कर उनके 'रसकलस' नामक ग्रंथ को देखें, उसके देखने से ही यह ज्ञात हो जायगा कि मेरे कथन में कितनी सत्यता है। वात्सल्य रस की कविता करने में भी उनका आचार्यत्व भलकता है। जिस समय वात्सल्य रस की खड़ी बोली की कोई कविता हिन्दी साहित्य संसार में नहीं थी उस समय आप ही आगे आये और इस रस पर खड़ी बोली की कविता लिखने का मार्ग प्रशस्त किया। आज बाल सम्बंधी मासिक पत्रों में खड़ी बोली की बाल कविताओं की न्यूनता नहीं है वरन् भरमार है। लेकिन आज कल के बाल कविता के लेखक किसकी अनुगामिता करते हैं और किसका पदानुसरण करते हैं यदि इसका विचार न्यायतः किया जायगा तो यह स्पष्टतः कहा जायगा कि आचार्य 'हरिऔध' के। उन्होंने आदर्श ही नहीं उपस्थित किया है वरन् वात्सल्य रस पर इतनी अधिक कविता की है जितना आज तक कोई एक कवि भी नहीं कर सका। हिन्दी संसार के वर्तमान काल के जितने महाकवि या कवियत्रियां हैं उन में से कितने ऐसे हैं जिन्होंने वात्सल्य रस पर लेखनी चलाई है। वास्तव में यह गौरव पूज्य उपाध्याय जी को ही प्राप्त हुआ है।

इस ग्रन्थ की कविताओं को आप देखेंगे तो आप को ज्ञात हो जायगा कि पूज्य उपाध्याय जी की दृष्टि कितनी व्यापक और

घ

अन्तर्दशिनी है। बाल भाव के ऐसे चित्रों का चित्रण आपको इस ग्रन्थ में मिलेगा जो अन्यत्र दुर्लभ है। मैं उदाहरण के लिये कुछ पद्य नीचे उद्धृत करता किन्तु जब ग्रन्थ ही आपके सामने है तब मैं इस कार्य से विरक्त होता हूँ। आप यथास्थान उन पद्यों को देख सकते हैं और उस समय आप को ज्ञात होगा कि मेरे कथन में कितनी वास्तविकता है।

इस ग्रन्थ का नाम 'बाल कवितावली' है किन्तु वास्तव में यह एक ऐसा संग्रह है कि जिससे बड़े लोग और साहित्य मर्मज्ञ भी लाभ उठा सकते हैं। इसमें ऐसे २ पद्य हैं जो बालकों के ही शिक्षण का काम नहीं देंगे वरन् उनके माता पिता भी उनसे बहुत कुछ शिक्षा लाभ कर सकते हैं। साहित्य मर्मज्ञ भी उन को पढ़कर आनन्द लाभ कर सकते हैं। प्राकृतिक चित्रों का चित्रण भी स्थान स्थान पर इस ग्रन्थ में इस प्रकार किया गया है जो मनोमुग्धकर ही नहीं है द्रष्टा के सामने बड़े सुन्दर दृश्य भी उपस्थित करता है। जो कवि कर्म की शिक्षा लेना चाहते हैं उनको भी इस ग्रन्थ से बहुत कुछ लाभ हो सकता है। और भी बहुत सी बातें इस ग्रन्थ के विषय में लिखी जा सकती हैं परन्तु एक छोटेसे ग्रन्थ की लम्बी भूमिका वांछनीय नहीं। मैं यह निवेदन करके इस भूमिका को समाप्त करता हूँ कि यह ग्रन्थ बालों के ही लिये बाल नहीं है वरन् बालन पालन करने वालों का भी आदरणीय रत्न कहा जा सकता है।

वेनीमाधव शर्मा

विषय - सूची

१. बाल विनोद १ से १०
प्रभु का प्यार, खेल, चुड़िया, रेल, आम, भौरा, कोयल, भौरा
२. बाल विलास ११ से २०
फूलों की माला, माई के लाल, निराली धुन, मेरा लाला,
लाड़ प्यार, हौआ, बोलियाँ, सुग्गा मैना
३. बाल बोध २१ से ३२
मां बाप, बाप, माता, बाप, बाप का बड़प्पन, बाप का प्यार,
रखवाला बाप, सारे सुख का बीज, बहिन, माता
४. बालकों का बोलवाला ३३ से ५४
हँसी खेल के पुतले, बाल्यकाल, बाल भाव, बालक,
बाल कविता, लड़कपन, भोला भाला लाल, लाल, सोना और
सुगंध, चन्द, कोई लाल, चन्द खिलौना, प्यारा मुखड़ा,
तुतली बातें
५. माता-पिता की ममता ५५ से ७८
सबेरा, प्यार पंचक, प्यारे चिनगारी मत खेलो, तू ने क्यों
नन्हीं को मारा, प्यारे लड़कों को न रुलाओ, बच्चों को

तुम जी से चाहो, माता का प्यार, माता की ममता, मोती
की मालायें दूटीं, कल केलि, रात का सोना, पिता का प्यार,
लाड़िले का लाड़, मेरा लाला, चाह, चन्दा मामा, लाड़ प्यार,
गोदी भरे लाल, पुतले, नया खिलौना, नटखट बालक

६. विविध-विषय

७९ से ११८

बड़े की बड़ाई, विनय, सवेरे का काम, गिलहरी, बन्दर,
कोयल, जुगनू, लुभावने फूल, तितली, चमकीले तारे, तारे,
चन्द, चिड़ियाँ, काम की बातें, फूल और तारे, खेल,
गुलाब का एक फूल, कुछ वूँदियाँ, फूल और काँटा,
चुगली, हलकापन, मीठी बोली, कुल दीपक, शिचा

१

बाल विनोद

बाल-विनोद

३३

प्रभु का प्यार

गीत गीत गीत ।
गाओ लड़को गीत ।

अच्छे गीत सँवारे गीत ।
प्यारे प्रभु के प्यारे गीत ।
सुख के बड़े सहारे गीत ।
सीधे सधे सुधारे गीत ।

गीत गीत गीत ।
गाओ लड़को गीत ।

जन्म बनाने वाले गीत ।
पार लगाने वाले गीत ।
भाग जगाने वाले गीत ।
बहुत लुभाने वाले गीत ।

गीत गीत गीत ।
गाओ लड़को गीत ।

खेल

खेल खेल खेल ।

लड़को खेलो खेल ।

अच्छा खेल प्यारा खेल ।

देखा और दुलारा खेल ।

जीता खेल हारा खेल ।

सीखा और सँवारा खेल ।

खेल खेल खेल ।

लड़को खेलो खेल ।

हँसने गाने वाला खेल ।

मन उमगाने वाला खेल ।

जी बहलाने वाला खेल ।

रंग दिखाने वाला खेल ।

खेल खेल खेल ।

लड़को खेलो खेल ।

बाल-विनोद

५

चुहिया

आई आई ।

चुहिया आई ।

लुकती आई छिपती आई ।

देखे लोग दबकती आई ।

बरती और चिहुँकती आई ।

खुर खुर खुर खुर करती आई ।

आई आई ।

चुहिया आई ।

अपना खेल दिखाती आई ।

आंखों को चमकाती आई ।

दाना बिन बिन खाती आई ।

मुँह चौगुना चलाती आई ।

आई आई ।

चुहिया आई ।

६

बाल-विनोद

रेल

रेल रेल रेल ।

देखो लड़को रेल ।

हिलती रेल लड़कती रेल ।

भक भक भक भक करती रेल ।

घड़ घड़ घड़ घड़ चलती रेल ।

धड़ धड़ धड़ धड़ बढ़ती रेल ।

रेल रेल रेल ।

देखो लड़को रेल ।

दौड़ लगाने वाली रेल ।

जल भर लाने वाली रेल ।

आग लगाने वाली रेल ।

जोत जगाने वाली रेल ।

रेल रेल रेल ।

देखो लड़को रेल ।

बाल-विनोद

७

आम

आम आम आम ।

लेलो लड़को आम ।

आंख चुराने वाले आम ।

जी ललचाने वाले आम ।

छटा दिखाने वाले आम ।

बहुत लुभाने वाले आम ।

आम आम आम ।

लेलो लड़को आम ।

पीले आम फवीले आम ।

नीले हरे रंगीले आम ।

लंबे गोल चुकीले आम ।

मीठे बड़े रसीले आम ।

आम आम आम ।

लेलो लड़को आम ।

८

बाल-विनोद

भौंरा

आया आया ।

भौंरा आया ।

मन मन मन मन करता आया ।

उमग भांवरें भरता आया ।

रस के लिये उतरता आया ।

फूल फूल पर फिरता आया ।

आया आया ।

भौंरा आया ।

उड़ता आया अड़ता आया ।

लड़ता और झगड़ता आया ।

मिड़ता और अकड़ता आया ।

उठता गिरता पड़ता आया ।

आया आया ।

भौंरा आया ।

बाल-विनोद

५

कोयल ।

बोली बोली ।

कोयल बोली ।

इधर उधर फिर फिर कर बोली ।

घूम घूम कर घर घर बोली ।

पिछले पहर रात भर बोली ।

कूक कूक डालों पर बोली ।

बोली बोली ।

कोयल बोली ।

छिप पत्तों के भीतर बोली ।

पागल बन बन बाहर बोली ।

उमग उमग दिन दिन भर बोली ।

तन सुध बिसर बिसर कर बोली ।

बोली बोली ।

कोयल बोली ।

भौंरा ।

भौंरा आया ।

भौंरा आया ।

गुन गुन गाने वाला आया ।

बेनु बजाने वाला आया ।

खेल दिखाने वाला आया ।

धूम मचाने वाला आया ।

भौंरा आया ।

भौंरा आया ।

कांटों पर से डर कर आया ।

कितनी ठौर ठहर कर आया ।

कमल बनों में घर कर आया ।

फूल धूल में भर कर आया ।

भौंरा आया ।

भौंरा आया ।

२

बाल विलास

फूलों की माला ।

हरी भरी धरती पर जिसने,
प्यारे पेड़ उगाये ।

हरे हरे पत्तों में जिसने,
सुन्दर फूल खिलाने ।

मीठे मीठे फल से जिसने,
डालें बहुत सजाई ।

हरी चादरें दूबों की जिसने,
कम नहीं बिछाई ।

बड़ा अनूठा चन्द खिलौना,
जिससे तुमने पाया ।

काजल पुती रात को जिसने,
तारों से चमकाया ।

जिसकी जोत मिलगये सूरज,
करता है उँजियाला ।

गूँधो लड़को गूँधो उसके,
गुन फूलों की माला ।

माई के लाल ।

मैं हूँ भोला भाला लाल ।

मेरे हैं घुँघराले बाल ।

जब हँसता हूँ दांत निकाल ।

लुटते हैं मोती के थाल ।

मेरी आंखें जादू ढाल ।

किसको करतीं नहीं निहाल ।

मेरे ये गुलाब से गाल ।

हैं ललचें होठों के माल ।

मेरे हाथ कौल से लाल ।

जब देते हैं फूल उछाल ।

कितनी आंखों में रस ढाल ।

कर देते हैं बड़ा कमाल ।

ताली बजा बजा दे ताल ।

छम छम नाचेंगे सब काल ।

देंगे कोई दीया बाल ।

हम तो हैं माई के लाल ।

निराखी धुन ।

जब अपना मुँह खोलेंगे ।
 मीठी बोली बोलेंगे ।
 जब आंखें खुल पायेंगी ।
 प्यार भरी दिखलायेंगी ।
 जब उमंग में आयेंगे ।
 जगती जोत जगायेंगे ।
 कभी गीत जब गायेंगे ।
 किसको नहीं लुभायेंगे ।
 आंखों में बस जायेंगे ।
 जी में जगह बनायेंगे ।
 अगर कभी मुसकायेंगे ।
 रस की सोत बहायेंगे ।
 जहां अंधेरा पायेंगे ।
 दीया वहां जलायेंगे ।
 जो मीठे फल लायेंगे ।
 ऐसे फूल खिल येंगे ।

मेरा लाला ।

चन्द उतर कर जल में नाचे,

संगे नाचे तारा ।

उठा उठा कर लहरें नाचे,

गंगा जी की धारा ।

हवा लगे पर पत्ता नाचे,

नाचे फूल फवीला ।

घूम घूम कर तितली नाचे,

पैन्हे साज रंगीला ।

कहती है बज पांव पैजनी,

एई एई एई ।

घर में मेरा लाला नाचे,

थेई थेई थेई ।

लाड़ प्यार ।

रहो चहकते चिड़ियों जैसा ।

ठुमुक ठुमुक मोरों सा नाचो ।

उजले दांतों को दिखलाकर ।

मोती की लड़ियों को जाँचो ।

रंग विरंगी तितली का सा ।

रंग विरंगा पन दिखलाओ ।

भरो भाँवरे भाँवरों की सी ।

कोयल की सी कूक सुनाओ ।

रहो खेलते हँसते खिलते ।

ललकी आँखों को ललचाओ ।

थिरको गाओ ताली दे दे ।

रुनक झुनक पैजनी बजाओ ।

बोल बोल कर तुतली बोली ।

देते रहो मिठाई हमको ।

फूलों फूलों जैसा फूलो ।

चन्दा मामा जैसा चमको ।

हौआ ।

चीं चीं चीं चीं चिड़िया बोलै

भन भन भन भन भँवरा ।

कू कू कू कू कोयल बोलै

पी पी पी पपीहरा ।

मोठी बोली सैना बोलै

सीटी देता सखा ।

तरह तरह को बोलो बोलै

तेरा काका तूआ ।

तूही तूही तूती बोलै

बजती है पि पी हरी ।

कुकड़ कूँ यह मुरगा बोल

टिड्डी टी टिटीहरी ।

गुडर गूँ कबूतर बोलै

कां कां कां कां कौआ ।

किलक किलक कर लाला बोलै

हू हू हू हू हौआ ।

बोलियाँ ।

ती ती ती ती कोरा बोलै

झीं झीं झीं झीं झिल्ली ।

चूँ चूँ चूँ चूँ चूहा बोलै

म्याऊँ म्याऊँ बिल्ली ।

किट किट किट विसतुइया बोलै

किर किर किर गिलहरी ।

तुन तुन तुन एकतारा बोलै

पी पी पी पिपिहरी ।

टन टन टन टन घंटा बोलै

ठन ठन ठन रुपइया ।

बछड़ा देखे वाँ वाँ बोलै

तेरी प्यारी गइया ।

ठनक ठनक कर तबला बोलै

डिम डिम डिम डिम डौंड़ी ।

टेढ़ी मेढ़ी बातें बोलै

बाबा जी की लौंड़ी ।

सुग्गा मैना ।

गड़ गड़ मड़ गड़ बादल बोलै

खड़ खड़ खड़ खड़ पत्ता ।

बड़ी बड़ी बूँदों से बोलै

पड़ पड़ पड़ पड़ छया ।

जले तवा पर गिर कर बोलै

छन छन छन छन पानी ।

चहक चहक चुक चुहिया बोलै

अमृत जैमी बानी ।

मर मर मर मर पौधा बोलै

चर चर चर चर डाली ।

भिन भिन भिन भिन मक्खी बोलै

झन झन झन झन थाली ।

देख देख कर अपना मुखड़ा

हाथों में ले ऐना ।

सब से मीठी बोली बोलै

मेरा सुग्गा मैना ।

३

बाल बोध

मां बाप ।

देख कर के जिनकी आँखें ।

तुमारी आँखें खुल पाई ।

जिन्होंने बोल बोल तुमको ।

बोलियाँ कितनी सिखलाई ।

कंठ जिनका चलता देखे ।

तुमारा कंठ फूट पाया ।

देख जिन लोगों का हँसना ।

तुम्हें भी हँसना है आया ।

बैठ कर जिनके कंधों पर ।

उमंगों से तुम भर पाये ।

छातियों से जिनकी लग कर ।

फूल से फूले दिखलाये ।

गोद में बैठ बैठ जिनकी ।

गोदियाँ में जाना सीखा ।

चूमते रहने से जिनके ।

चूमने के रस को चीखा ।

२४

बाल-बोध

हाथ से जिनके खा खा कर ।

स्वाद सब अन्नो का पाया ।

पकड़ करके जिनकी उंगली ।

निबल पाँवों में बल आया ।

वही माँ बाप तुम्हारे हैं ।

पाँव उनका सब दिन चूमो ।

मिलेगा कहीं नहीं उन सा

सब जगत में चाहे घूमो ।



बाल-बोध

२५

बाप

सारे सुख का बीज बाप है सिरका साया ।

वह प्याला है प्यार छलकता जिसमें पोया ।

पल पाता है पूत उसी के लाले पाले ।

खुल जाती हैं आँख उसी के देखे भाले ।

उसको पा हित पेड़ अनूठे फल है लाता ।

जो रस है अनमोल उसे है वही पिलाता ।

नर साँचे में सदा ढले उसके ही ढाले ।

धो देता है वही कसर के धब्बे काले ।

किसी लाल के लिये वहीं है सरवस खोता ।

वही निछावर किसी बाल छत्रि पर है होता ।

देख किसी का बड़ा अनूठा मुखड़ा प्यारा ।

वही बनाता है उसको आँखों का तारा ।

है उसके ही पास जड़ी वह बड़ी अनूठी ।

जिससे सुत की सदा भरी रहती है मूठी ।

उससे ही मिल सकी किसीको वह मणि खोई ।

है माई का लाल कहाता जिससे कोई ।

२६

बाल-बोध

माता

किसने जल से पिंड सँवारा ।

किससे मिली दूध की धारा ।

किस ने हम को पोसा पाला ।

किसने कहा आँख का तारा ।

जब थे आँखें खोल न पाते ।

रहे बलूले सा दिखलाते ।

तब किसने था हमें सँभाला ।

जब फूलों जैसा कुम्हलाते ।

किसने दी सोने सी काया ।

जादू करके हमें जिलाया ।

किसने रखा कलेजे में है ।

किसने आँखों पर बिठलाया ।

सबने माथा उसे नवाया ।

सबने उसे पूज सुख पाया ।

माता ही है सच्ची देवी ।

है धरती उसकी ही छाया ।

बाल-बोध

२७

बाप

चन्दा मामा को दिखलाता ।

कभी तोड़ फूलों को लाता ।

कंधों पर है कभी बिठाता ।

कभी पीठ पर तुम्हें चढ़ाता ।

कभी खिलौने तुमको देता ।

कभी गद में है ले लेता ।

छाती से है कभी लगाता ।

कभी चूम मुखड़ा सुख पाता ।

बच्चे ! है वह बाप तुम्हारा ।

तुम से है उसका सुख सारा ।

उसने है तुमको जनमाया ।

पोसा पाला बड़ा बनाया ।

मत उसकी भलाइयाँ भूलो ।

तुम उसके पाँवों को छू लो ।

उसको एक देवता जानो ।

जो वह कहे उसे तुम मानो ।

बाप का बड़प्पन

जब हो तुम वे तरह मचलते तब है कौन मनाता ।
 सुन तुतली गालियाँ गले से तुमको कौन लगाता ।
 लगे थपेड़े कौन चूमता हंस कर हाथ तुम्हारा ।
 तुरत पिघल जाता जी किसका देख नयन जल धारा ।
 जब तुम जाते तिनक कौन तब होता था बलिहारी ।
 किसे तुम्हारी बहकी बात भी लगती हैं प्यारी ।
 तुमको दुखी देख किसको दुख अपना नहीं दिखाता ।
 देख तुम्हारी खीज कौन है होठों में मुस्काता ।
 एक बाप को छोड़ प्यार किसका इतना दिखलाया ।
 सदा मेघ को ही पेड़ों पर जल बरसाते पाया ।
 है सच्चा देवता बाप ही तुम उसको पहिचानो ।
 रहो बाप के बनो बाप के बात बाप की मानो ।

बाप का प्यार

चाप जैसा किसका है प्यार ।

उमग बनाता है वच्चों को कौन गले का हार ।

हँस नन्हें नन्हें हाथों की कौन सहे है मार ।

कौन चाँद से मुखड़े पर तन मन देता है वार ।

फूल सा कलेजा है किसका जिसमें है रसधार ।

है किसकी रुचि चीन में भरी बड़ी भली झनकार ।

रखवाला बाप

चाप है सच्चा रखवाला ।

पास उसी के दिखलाता है प्यार छलकता प्याला ॥

देख दिये की लौ जब तुम थे उसके लिये लपकते ।

साँप रेंगता देख रीझ जब उसे पकड़ने चलते ॥

तब सँभाल कर कौन तुम्हें था बातों से बहलाता ।

मुँह के बल जब गिरगिर पड़ते तब था कौन उठाता ॥

मुंह में देख डालते कितने अला बला को छीना ।
 तीर देख कर आता किसने किया सामने सीना ॥
 जब था चेत न, तुमसे जब थी सदा भूल ही होती ।
 तब सुध बीज तुमारे जी में किसकी मति थी बोती ॥
 बुरा भला हित अनहित सुख दुख तुमने किससे जाना ।
 देख बाप की आँखों सबने जग को पहिचाना ॥

सारे सुख का बीज

कौन तुमसे हिलमिल खेला ।
 कहां तुमारे लिये किसी ने कब इतना दुख झेला ॥
 किसने अपनी ही गोदी में घंटों तुम्हें सुलाया ।
 अपने ऊपर सभी बला ले किसने तुम्हें बचाया ॥
 तुम्हें मचलते देख प्यार से किसने मुखड़ा चूमा ।
 कौन दुखों में रात रात भर गोद में लिये घूमा ॥
 किसे टहल के लिये खड़ा ही एक पांव से पाया ।
 किसका जी कुम्हला जाता है तुम्हें देख कुम्हलाया ॥
 किनमें लाड़ प्यार है इतना कौन उन्हें है पाता ।
 बाप बाप जैसा है जग में माता जैसी माता ॥

बाल-बोध

३१

बहिन

देखो लड़को ! बहिन तुम्हारी ।

कैसी है भोली औ प्यारा ॥

उसके हाथ पाँव हैं छोटे ।

पतले पतले थोड़े मोटे ॥

लाल लाल औ गोरे गोरे ।

जैसे किसी रंग के बोरे ॥

कितने आँखों को हैं भाते ।

कैसे हैं अच्छे दिखलाते ॥

उसका धीरे धीरे चलना ।

कभी खेलना कभी मचलना ॥

दो दो दाँतों को दिखलाकर ।

उसका हंसना कुछ मुसकाकर ॥

तुतली बातें प्यारी प्यारी ।

उसका कहना बारी बारी ॥

मला नहीं किसको ठगता है ।

किसे नहीं प्यारा लगता है ॥

उसे खेलौना जब देते हो ।

से गोद लेते हो ॥

तब वह कैसी खिल जाती है ।

कैसी प्यारी दिखलाती है ॥

तुम उसको मत कभी रुलाओ ।

मत छेड़ो मत उसे डराओ ॥

बातों से उसको बहलावो ।

प्यार दिखाकर हंसो हँसावो ॥

अच्छे लड़के तभी बनोगे ।

औ सबके प्यारे तुम होगे ॥

माता

किसने तुमको पोसा-पाला, किसने तुम्हें जिलाया ।

बड़े प्यार से किसने तुमको अपना दूध पिलाया ।

गिना तुम्हारे दुख को किसने अपने दुख से बढ़कर ।

उमग उमग पड़ते थे तुम किसके कंधों पर चढ़कर ।

किसकी मीठी बातें सुन तुम फूले नहीं समाते ।

उँगली पकड़ पकड़ चल किसकी तुम हँसते मुसकाते ।

जिसका मुखड़ा देख तुम्हें है सारा सुख मिल जाता ।

वह माता है, स्वर्ग नहीं जिसके पद-रज को पाता ।

४
बालकों
का
बोलबाला

हँसी खेल के पुतले ।

किलक किलक कर कानों को हैं प्यारी सुधा पिलाते ।
 ललक ललक कर लोचन को हैं बार बार ललचाते ।
 गा गा मन माने गीतों को मन को हैं हर लेते ।
 बजा पिपिहरी पत्तों विरची हैं मोदित कर देते ।
 नाच नाच कर मंजु मोर सा ठुमुक ठुमुक हैं चलते ।
 उमग उमग कर भर उमंग में हैं कूदते उछलते ।
 गूँज रहे हैं भँवरों जैसा भर भाँवरें निराली ।
 कूक रहे हैं कोयल का सा बजा रहे हैं ताली ।
 देख देख तितली की रंगत हैं अपने तन रंगते ।
 चिड़ियों के चहचहे सुने, हैं आप चहकने लगते ।
 तोड़ तोड़ मीठे मीठे फल हैं खाते सुख पाते ।
 फूलों के रच रुचिर खिलौने फूले नहीं समाते ।
 नचा नचा कर लट्ठू उस पर हैं लट्ठू हो जाते ।
 फिरकी के समीप फिर फिर हैं फिरकी से दिखलाते ।
 बोल बोल कर वचन रसीले बड़े अनूठे तुतले ।
 हँस हँस करके खेल रहे हैं हँसी खेल के पुतले ।

बाल्यकाल

सामने था सुन्दर आलोक ।

अलौकिकता मय था संसार ।

भावनाएँ थीं अति रमणीय ।

भाव थे परम रम्य सुकुमार ।

हृदय में बहता था सुख स्रोत ।

सुधा-सिंचित था मानस-मोद ।

कान सुनते थे स्वर स्वर्गीय ।

छलकता मिलता चित्त विनोद ।

कुसुम-कोमल-सुतल्य से मंजु ।

गोद माता की थी सुख मूल ।

पिता का लालन पालन प्यार ।

था पुलक मय मानस-अनुकूल ।

ललकते जन-लोचन सब काल ।

चदन मंजुल मेरा अवलोक ।

देखकर कला मयी मम केलि ।

विपुल पुलकित होते सब लोक ।

अधूरी मेरी तुतली बात ।

बजाती हृत्तंत्री के तार ।

धूल से भरी धूसरित देह ।

बहाती नयनों में रस धार ।

बालकों का बोलबाला

३७

ठुमुक कर चलना लटपट चाल ।

बनाता छिति-तल को छाँव धाम ।

किलकना कर-कर-बाल किलोल ।

खिलाता मानस-मुकुल ललाम ।

बाल-रवि-किरणों की कल कांति ।

लसाती मेरे रुचिर कपोल ।

कलानिधि कोमल करके साथ ।

खेलते थे मेरे दृग लोल ।

चमकते नभ के तारक पुञ्ज ।

चित्त में भरते अद्भुत भाव ।

फूँवते तरु के फल, दल, फूल ।

चौगुना करते थे मम चाव ।

दिशा होती दिव-वाला ज्ञात ।

प्रकृति पाता थी विपुल विकास ।

दिखाते नयनों में कर गेह ।

ललित लल्लापँ लोक-निवास ।

शांति मय सुख मय सरस महान ।

भाव मय भव मय अनुभवनीय ।

लोक में बाल काल के तुल्य ।

कौन-सा काल मिला कमनीय ।

३८

बालकों का बोलबाल ।

बाल भाव ।

बाल-भाव हैं अमल-कमल-सम कोमल होते ।

उनमें हैं सब काल सुधा के बहते सोते ॥

वे हैं चंद-समान मनोहरता-मतवाले ।

मलयानिल-से सरस छलकते रस के प्याले ॥

प्रमुदित मत्त मयूर-तुल्य कल नर्तन कारी ।

पुलकित-मृदुल-मराल-बाल इव मानस चारी ॥

सुर सरि के कल कल प्रवाह-जैसे कल नादी ।

मन मोहन की मधुर सुरलिका-से मृदु वादी ॥

उनके रस मय अंक में सरलता है पलती ।

मोहक मंजुल रंग में मृदुलता है ढलती ॥

मोले भाले भाव भरे उनमें हैं होते ।

वे भूतल में बीज मधुरिमा के हैं बोते ॥

वे हैं सुन्दर थल जहां हैं छल-जल सोते नहीं ।

वे हैं बहु सुरभित सुमन जो सौरभ खोते नहीं ॥

बालकों का बोलबाला

३६

बालक ।

फूल हो, फल हो या हो मूल ।
या निराले घर के हो माल ।

किसीकी आंखों की हो ज्योति ।
या किसी गोदी के हो लाल

किलकिलाते हो वारंवार ।
रहे हो कैसी बोली बोल ।

याद करते हो भूला पाठ ।
या कोई भेद रहे हो खोल ।

ललकते हो फूलों को देख ।
फूलों से दिखलाते हो प्यार ।

क्या मिलाते हो जी से जोड़ ।
समय हाथों के तोड़े तार ।

हरे पौधे लेते हैं मोह ।
बहुत खिंचते हो उनकी ओर ।

कौन सा बतलाती है भाव ।
चाह से भरी आँख की कोर ।

बालकों का बोलबाला

उसी में बैठ उसी के साथ ।
खेलते हो क्यों कितने खेल ।

भूलकर भी क्यों सके न भूल ।
धूल से क्यों इतना है मेल ।

देख खिलते फूलों का रंग ।
हुई क्यों खिल जाने की चाह ।

दिया क्या उन पदों को खोल ।
खुल गई जिससे दिल की राह ।

तुम्हारा बड़ा सुरीला कंठ ।
सुना करके सुन्दर झंकार ।

कौन गाता रहता है राग ।
छेड़कर किस वीणा का तार ।

कभी हँसते हो मुँह को खोल ।
होठ पर कभी मिली मुस्कान ।

गुदगुदाती है दिल में पैठ ।
क्या पुरानी कितनी पहचान ।

यालकों का वोल्वाला

४१

हँस रहे हो या प्यासी आंख ।

पा रही है प्यारा रस सोत ।

या किसी अन्धकार को चीर ।

जगमगा गई निराली जोत ।

सुखों का देख सलोना रूप ।

गल रहा है लालच का थाल ।

जगत की रंगीनी पर रीझ ।

या टपकती है मुख से राल ।

रेंग कर घुटनों के बल घूम ।

चारपायों की-सी चल चाल ।

दी गई गुत्थी कोई खोल ।

या बताते हो कोई हाल ॥

बाल कविता ।

सरस पदों से अधिक सरस है तुतली वाली ।

दोनों ही में यद्यपि है मधु मिसरी घोली ॥

दोनों ही का कथन हृदयग्राही है होता ।

दोनों ही में बहा सुधा रस का है सोता ।

किन्तु वचन की परम रुचिर रचना से रूरे ।

होते हैं विधु-वदन बाल के बोल अधूरे ॥

किलक किलक जो भाव बाल सब हैं बतलाते ।

वह व्यंजनता नहीं व्यंजना में हैं पाते ॥

क्रलित कंठ ध्वनि सकल ललित ध्वनि से है प्यारी ।

विविध प्रसादन है प्रसाद गुण से प्रियकारी ॥

एक उक्ति है मधुर अपर सरसित रस चीठी ।

कवि कविता ते कहीं बाल कविता है मीठी ॥



बालकों का बोलवाला

४३

लड़कपन ।

भोला-भाला बहुत निराला ।

लाखों आंखों का उँजियाला ।

खिले फूल सा खिला फबीला ।

बड़े छबीले मुखड़े वाला ।

हँसी खेल का पुतला प्यारा ।

बड़ा रंगीला नोखा न्यारा ।

जगमग जगमग करने वाला ।

उगा हुआ चमकीला तारा ।

अपने राग रंग में भूला ।

चाव से हिंडोलों पर झूला ।

चख चखकर फल वड़े रसीले ।

फिरने वाला फूला फूला ।

घुन में भरा न सुनने वाला ।

पिए बहँकने वाला प्याला ।

जी में बसा आंख में पैठा ।

लाड़ प्यार हाथों का पाला ।

४४

बालकों का बोलबाला

स्वर्ग लोक में रहने वाला ।

रस सोतों में बहने वाला ।

जी को बहुत लुभाने वाला ।

बात अनूठी कहने वाला ।

रस के किसी पेड़ से टूटा ।

फल उमंग हाथों का लूटा ।

समय बड़ी सुथरी चादर पर ।

क्रड़ा सुनहला सुन्दर बूटा ।

मँहक भरे फूलों का दोना ।

हँसती हुई आँख का कोना ।

लेने वाला मोल मनों का ।

खरा चमकने वाला सोना ।

साथ रंग रलियों के खेला ।

मीठा बजने वाला बेला ।

मन मानापन का मतवाला ।

बड़ा लड़कपन है अलबेला ।

भोला भाला लाल ।

सुनहली किरन रही थी फैल ।

बड़ा ही था सुहावना काल ।

रात थी मोती गई बखेर ।

चमकते थे वे हुये निहाल ।

खिल रही थीं कलियाँ मुँह खोल ।

लुभाता था हँस हँस कर फूल ।

महँक भीनी २ सब ओर ।

फिर रही थी अपने को भूल ।

सजा था रहा, छरहरे पेड़ ।

जोत औ हरियाली का मेल ।

हवा लह लही वेलियों साथ ।

खेलती थी कितने ही खेल ।

रही थीं समा निराला बाँध ।

पत्तियाँ हरीमरी हिल डोल ।

देह में लगे सुनहला तार ।

बड़ा था फबे फलों का मोल ।

४६

बालकों का बोलबाला

खुली धरती माता की गोद ।

भरी थी मिले अनूठा लाल ।

लाड़ करती थी जिसका दूध ।

निछावर कर मोती का थाल ।

देख वह बहुत रहा था रीझ ।

फूल पत्तों की बड़ी बहार ।

आँख भोलापन अपना भूल ।

अनूठी छवि थी रही निहार ।

खेलती थी मुखड़े पर मौज ।

रंग लाता था उल्लास प्यार ।

गूँथने लग जाता था चाव ।

भाव फूलों का सुन्दर हार ।

बड़ी लीलाओं का है मेद ।

ललकती आँखों का है माल ।

उपज के हाथों का है खेल ।

यह बड़ा भोला भाला लाल ।

बालकों का बोलवाला

४७

लाल ।

लाल लुनाई का है प्यासा ।

पीने वाला दूध बतासा ।

खोल-खोल मुंह हँसने वाला ।

प्यार आँख में बसने वाला ।

गान अनूठे गाने वाला ।

मन की ढोल बजाने वाला ।

लकड़ी को दौड़ाने वाला ।

घोड़ा उसे बनाने वाला ।

धूल-भरा, सोने-सा प्यारा ।

धरती का चमकीला तारा ।

हरा भरा फूलों सा फूला ।

अपने भोलेपन पर भूला ।

बहुत निराला सुथरा गोरा ।

दूध का भरा हुआ कटोरा ।

अँधियाले घर का उँजियाला ।

चंदा मामा का मतवाला ।

४८

बालकों का बोलवाला

सोना और सुगंध ।

प्यारे, यह गुलाब है फूला ।

जिसे देख तेरा मन भूला ।

इसका रूप रंग है न्यारा ।

इसीलिये है सब को प्यारा ।

देख उसी को तू ललचाया ।

रूप रंग है किसे न भाया ।

रूप रंग दोनों का होना ।

क्या है ? है सुगंध औ सोना ।

चन्द ।

चमक-दमक में सबसे न्यारा ।

चंद नहीं किसको है प्यारा ।

वह है फूले गेंदे-जैसा ।

या है विकसे कमलों ऐसा ।

माखन मेवे मुझे खिलाता ।

है वह मिथ्री धोल पिलाता ।

बालकों का बोलबाला

४९

कभी हँसाता कभी रिझाता ।

कभी अनूठे रस बरसाता ।

उसे देख कोई खिलती है ।

गले चाँदनी से मिलती है ।

रात निखर बनती है आला ।

पहन सजी मोती की माला ।

धरती जगी जोत है पाती ।

दिशा विहँसती है दिखलाती ।

पौंदे फूले नहीं समाते ।

प्यारी फव्वन फूल हैं पाते ।

मेरे पास चन्द तू आ जा ।

आकर अपना खाजा खा जा ।

सच्चा प्यार मुझे दिखला जा ।

मीठी मीठी बात सुना जा ।

५०

बालकों का बोलचाल

कोई लाल ।

कलियाँ हैं खिल रहीं, बेलियाँ हँस रहीं ।

धरा हरी चादर फूलों से है भरी ।

फूट रहा है जोत, निराला है समा ।

अँधियाले में छूट रही है फुलझड़ी ।

बड़ी बड़ी आँखों में जादू है भरा ।

चित्त देख भोला पन जाता भूल है ।

हरी-भरी दूबों की प्यारी गोद में ।

है यह कोई लाल या खिला फूल है ।

—

बालकों का बोलबाला

५१

चन्द खिलौना ।

चन्दा मामा दौड़े आओ ।

दूध कटोरा भर कर लाओ ।

उसे प्यार से मुझे पिलाओ ।

मुझ पर छिड़क चांदनी जाओ ।

मैं तेरा मृग छौना लूंगा ।

उसके साथ हँस-खेलूंगा ।

उसकी उछल कूद देखूंगा ।

उसको चाटूंगा, चूमूंगा ।

तू है अगर चाँदनी वाला ।

तो मैं भी हूँ लाल निराला ।

जो तू है अमृत बरसाता ।

तो मैं हूँ रस-स्रोत बहाता ।

जो तेरी किरनें हैं न्यारी ।

तो मेरी बातें हैं प्यारी ।

तू है मेरा चन्द खिलौना ।

मैं हूँ तेरा छुन्ना मुन्ना ।

५२

बालकों का बोलचाल

प्यारा मुखड़ा ।

सदा दमक दिखला दाँतों की ।

ललक भरे उर में बसता है ।

अपने लाल लाल होठों से ।

समा सामने ला हँसता है ।

वह है किसी चाँद सा सुन्दर ।

किसी फूल सा खिलने वाला ।

ऊँजियाला अँधियाले घर का ।

भरा लबालब रस का प्याला ।

जो को बहुत लुभाने वाला ।

माँ के दिल का बड़ा दुलारा ।

हँसता हुआ किसी बच्चे का ।

भोला भाला मुखड़ा प्यारा ।

बालकों का बोलबाला

५३

तुतली बातें

चोना टोना करता रहता ।

हँसना है जादू कर पाता ।

कभी मचलना कभी किलकना ।

किसके जी को नहीं लुभाता ।

भोले मुखड़े का भोलापन ।

देख कौन है भूल न जाता ।

बना बना कर मुँह मुसकाना ।

समा निराला है दिखलाता ।

खेल खेल खेलों को खिलना ।

रुनुक झुनुक पैजनी बजाना ।

मन से मनमाने गीतों का ।

अपने सुर तालों में गाना ।

५४

बालकों का बोलबाला

स्वर्ग बना देता है घर को ।

लगा भाल में सुख के रोली ।

ललकें नाच नाच उठती हैं ।

सुने लाल की तुतली बोली ।

५

माता-पिता
की
ममता

माता पिता की ममता

५१

सवेरा ।

उठो लाल आँखों को खोलो ।

पानी लाई हूँ, मुख धोलो ।

बीनी रात कमल सब फूले ।

उनके ऊपर मौरे भूले ।

चिड़ियाँ चहक उठों पेड़ों पर ।

बहने लगी हवा अति सुन्दर ।

नभ में न्यारी लाली छाई ।

धरती ने प्यारी छवि पाई ।

ऐसा सुन्दर समय न खोवो ।

मेरे प्यारे अब मत सोवो ।

भार हुआ सूरज उग आया ।

जल में पड़ी सुनहरी छाया ।

मिट्टा अँधेरा हुआ उजाला ।

किरणों ने जीवन सा डाला ।

जाग जगमगा उठा जगत सब ।

मेरे लाल जाग तू भी अब ।

५८

माता पिता की ममता

जागो प्यारे हुआ सवेरा ।

मैं देखूं हँसता मुख तेरा ।

आँखें खोल कमल विकसाओ ।

होंठ हिला कर फूल खिलाओ ।

ठुमुक ठुमुक आँगन में डोलो ।

किलक बोलियाँ मीठी बोलो ।

मुझे लुभा लो जी उमगा कर ।

रुनुक झुनुक पैजनी बजाकर ।

प्यार पंचक ।

मेरे प्यारे बेटे आवो

मीठी मीठी बातें कह कर ।

मेरे जी की कली खिलाओ ।

उमग उमग कर खेलो, कूदो ।

लिपट गले से मेरे जाओ ।

इन मेरी दोनों आँखों में ।

हँस कर सुधा बूँद टपकाओ ।

प्यारे चिनगारी मंत खेलो ।

फेंको फेंको उसको फेंको ।

मुझ से एक खिलोना ले लो ।

फेंके देते हो क्यों टोपी ।

उसको अपने सिर पर दे लो ।

देखो रोते हैं यह लड़के ।

तुम न छीन इनके गहने लो ।

तू ने क्यों नन्हीं को मारा ।

कितनी है यह भोली भाली ।

कितना है उसका मुख प्यारा ।

दया नहीं क्या होती तुझ को ।

वही देख आँसू की धारा ।

उसका जी भी तुझ सा ही है ।

क्या इतना भी नहीं बिचारा ।

वह है छोटी बहन तुम्हारी ।

क्यों न उसे तुमने पुचकारा ।

जाकर गले लगा लो उसको ।

कहना मानो लाल हमारा ।

६०

माता पिता का ममता

प्यारे लड़कों को न रुलाओ ।

हँसी खेल के ये पुतले हैं ।

तनिक न तुम इनको कलपाओ ।

प्यार करो; मुख चूमो; मीठी ।

बातों से इन को बहलाओ ।

खिले हुये सुन्दर मुखड़े को ।

मत कुम्हलाया फूल बनाओ ।

बच्चों को तुम जी से चाहो ।

प्यार करो, आँखों पर ले लो ।

पुलकित हो हो उन्हें सराहो ।

उन से मीठी बोली बोलो ।

जिसमें अनुपम लाड़ भरा हो ।

जिससे वे ऐसे विकसित हों ।

जैसे कोई कमल खिला हो ।

माता पिता की ममता

६१

माता का प्यार

मेरे लाल हमारे प्यारे ।

ऐ मेरी आँखों के तारे ।

तेरा मुखड़ा भोला भाला ।

सुन्दरता साँचे में ढाला ।

कहीं चन्द्रमा से न्यारा है ।

खिले कमल ऐसा प्यारा है ।

उसे देख नव निधि हूँ पाती ।

मैं हूँ फूली नहीं समाती ।

मेरे प्यारे बेटे आ जा ।

मीठी मीठी बात सुना जा ।

रस इन कानों में बरसा जा ।

सुधा-बूँद इनमें टपका जा ।

तेरी बातें हैं अति प्यारी ।

उसमें है मिसरी सी डारी ।

तेरी बातें तुतली, भोली ।

हैं अनमोल मोतियों तोली ।

६२

माता पिता की ममता

प्यारे तू है भोला भाला ।

मेरी आँखों का उँजियाला ।

नई पौध उपजाने वाला ।

कीरत बैलि उगाने वाला ।

भरा लवालव, वड़ा निराला ।

तू है मधुर रसों का प्याला ।

जिनकी महँक बहुत है आला ।

तू है उन फूलों का थाला ।

तू है ऐसा लाल हमारा ।

जो सब लालों से है न्यारा ।

तू है ऐसा रतन हमारा ।

जिस पर सब रतनों को चारा ।

तू है खिला गुलाब हमारा ।

सब फूलों से सजा सँवारा ।

तू है सुन्दर चाँद हमारा ।

सब चाँदों से कोमल प्यारा ।

तेरे मुखड़े का उँजियाला ।

है अँधियाला खो वाला ।

तेरे हाथों की यह लाली ।

है उलझी सुलझाने वाली ।

माता पिता की ममता ६३

तेरी यह प्यारी किलकारी ।

हरती है आकुलता सारी ।

तेरा मन्द मन्द मुस्काना ।

है जादू करता मन माना ।

तू है उस सीपी का मोती ।

जिसकी कान्ति दिव्य है होती ।

तू है हीरा उस थल वाला ।

जहाँ रहे सब काल उँजाला ।

तू है खिला कमल उस सर का ।

जहाँ राज है सरस मधुर का ।

कुम्हला सका नहीं जिसका दल ।

तू उस तरु का है सुन्दर फल ।

प्यारे तू है उसकी कला ।

सदा जो फूला फला ।

तू है उस साँचे में ढला ।

जिसे छू नहीं सकती बला ।

तू उस पलने में है पला ।

जो है बड़ा अनूठा भला ।

तू उस पथ पर होकर चला ।

जहाँ अलौकिक दीपक बला ।

६४

माता पिता की ममता

प्यारे तू है उसकी थाती ।

जिसका है दुनिया यश गाती ।

तू उस बड़ी जाति का है जन ।

जिसका जी है जड़ी-सजीवन ।

तू है उस ऊँचे कुल वाला ।

जिसने जग में किया उँजाला ।

तू है उस पारस ही का कन ।

जिसे छू हुआ लोहा कंचन ।

जाति सकल आशाओं का थल ।

प्यारे है तेरा मुख कोमल ।

जब है वह जी खोल उमगती ।

तब है तेरा ही मुख तकती ।

उसकी आंख लालसा वाली ।

तेरे मुख की है मतवाली ।

रहती है रुचि भंवरी भूली ।

मुख छवि देख कली सी फूली ।

माता की ममता ।

उठो लाल नभ लाली छाई ।

खिलीं गुलाब अनूठी कलियाँ ।

विकसित हो कमलिनि रँग लाई ।

पुलकित कर सारा पृथ्वी तल ।

वही पवन प्यारी मन भाई ।

हिलीं पत्तियाँ लतिका डोलीं ।

पेड़ों ने अनुपम छवि पाई ।

लगीं चहकने जग कर चिड़ियाँ ।

चक्री चक्रवा के ढिंग आई ।

दिशा हुई आलोकित कुसुमों-

ओर अलि अत्रलि आकुल धाई ।

जागो प्यारे किरणें फूटीं ।

अति छवि साथ तम निधन करके ।

छिति तल ओर छिटिक कर छूटीं ।

जगत जगमगाया गिरि वर पर ।

तरु पर रुचिर ज्योतियाँ जूटीं ।

रजनि-सुन्दरी उर पर लसती ।

६६

माता पिता की ममता

मोती की मालायें टूटें ।

मेरे प्यारे आँखें खोलो ।

बीती रात छिपे सब तारे ।

ला पानी अपना मुख धो लो ।

बचन तोतले बड़े रसीले ।

उठकर किलक किलक कर बोलो ।

कानों में अपनी जननी के ।

निपट निराली मिश्री धो लो ।

लाल लाल पतले होठों से ।

विकसे फूलों की छवि तो लो ।

रुनुक झुनुक पैजनी बजाकर ।

ठुमुक ठुमुक आँगन में ढोलो ।

कल केलि ।

मेरे भोले भले लड़के ।

लाल लाल हैं हाथ तुमारे जैसे टटके पत्ते बड़ के ।
जी करता है चूम उन्हें लूं हैं उनकी अति भली भलाई ।
देख अनूठी प्यारी रंगत भला न किसकी आँख लुभाई ।
गये बनाये हाथ लाल क्यों हैं उसमें यह सझ निराली ।
इनसे करो काम तुम ऐसे जिनसे बनी रहे मुंह लाली ।
तू तो खिलता फूल अभी है ।

कभी किलकता औ हँसता है कहता तुतली बात कभी है ।
सबको तुझ से आस बड़ी है तुझको करता प्यार सभी है ।
तुझ से रहे जाति मुंह लाली तू माई का लाल तभी है ।
तू सब लालों से है आला ।

देखा गया हाथ में तेरे प्रेम-सुधा का सुन्दर प्याला ।
बड़े लाड़ से भली गोद में तू ही सदा गया है पाला ।
खुलता है तुझ कुंजी से ही ज्ञानों का पेचीला ताला ।
तुझ सा तेज और लालों में किसने कब है देखा भाला ।
तेरा ही है रंग निराला तू ही है जग का उँजियाला ।

६८

माता पिता की ममता

रात का सोना ।

आ री नींद लाल को आजा ।

उसको करके प्यार सुलाजा ।

तुझे लाल हैं ललक बुलाते ।

अपनी आँखों पर बिठलाते ।

तेरे लिये बिछाई पलकें ।

बढ़ती ही जाती हैं ललकें ।

क्यों तू है इतनी इठलाती ।

आ मैं भी हूँ तुझे बुलाती ।

गोद नींद की है अति न्यारी ।

फूलों से है सजी सँवारी ।

उसमें बहुत नरम मन भाई ।

रुई की है पहल जमाई ।

बिछे बिछौने हैं मखमल के ।

बड़े मुलायम सुन्दर हलके ।

जो तू लाल चाह उमकी कर ।

तो तू सोजा आँख मूँद कर ।

माता पिता की ममता

६६

मीठी नींदों प्यारे सोओ ।
सोने की पुतली मत खोओ ।

उसकी करतूतों के ही बल ।
ठीक ठीक चलती है तन-कल ।

नींद हाथ में है वह डली ।
चखा जिसे पर भूख न टली ।

उसकी आँखें हैं रस भरी ।
वह है सरग लोक की परी ।

पिता का प्यार ।

पूछता हूँ यह प्यारी बात ।
बता दो मुझको मेरे लाल ।

देख तुमको क्यों मेरी आँख ।
सदा होती है बहुत निहाल ।

जब ललक दिखलाते हो प्यार ।
बहुत ही मीठी बोली बोल ।

बढ़ाते हा तब कैसे रीझ ।
हमें क्यों ले लेते हो मोल ।

माता पिता की ममता

दौड़ कर जब आते हो पास ।

गले लग जब करते हो प्यार ।

तब हमें तुम लेते हो मोह ।

पिन्हाकर किन फूलों का हार ।

बड़े ही भोले पन के साथ ।

देखते हो जब मेरी ओर ।

आँख तब क्यों लेते हो छीन

चित्त के क्यों बनते हो चोर ।

जब कभी हँसते हो दि खोल ।

उमगते हो जब भरे उमंग ।

चौगुना होता है तब चाव ।

रंग लाती है हृदय-तरंग ।

खेलते हो जब कोई खेल ।

न-जाने क्या करके उस काल ।

चढ़ाते हो वह न्यारा रंग ।

बने बूढ़ा भी जिससे बाल ।

तुम्हारे टूटे-फूटे शब्द ।

बहुत लड़ियाँ देते हैं जोड़ ।

तुम्हारी प्यारी तुतली बात ।

अमिल कड़ियाँ देतो हैं तोड़ ।

माता पिता की ममता

७१

लाड़िले का लाड़ ।

तू है किसका नहीं दुलारा ।

है मेरी आँखों का तारा ।

तेरा मुखड़ा रंग रंगीला

है फूलों से कहीं फवीला

तेरी बोली भोली भाली ।

होठ की बड़ी सुन्दर लाली ।

गोरा बदन दाँत चमकीले ।

छोटे छोटे हाथ फवीले ।

तेरा हँसना और मचलना ।

तेरा ठुमुक ठुमुक कर चलना ।

कभी खेलना, कभी किलकना ।

कभी ठुनुकना, कभी ललकना ।

किसका जी है नहीं लुभाता ।

घर में है रस-सोत बहाता ।

दिखलाता है रंग निराला ।

भर-भरकर उमंग का प्याला ।

७२

माता पिता की मकता

मोती-भरा थाल है मेरा ।

गोदी-भरा लाल है मेरा ।

तेरी आँखों में है टोना ।

तू है मेरा श्याम-सलोना ।

मेरा लाला ।

टूटी फूटी बातें जिसकी मुझको लगती प्यारी ।

जिसकी आँखों में दिखलाती है फूली फुलवारी ।

ठुनुक-ठुनुक कर मचल-मचल करके जो है खिलजाता ।

झूठे-मूठे गीत सुनाकर जो है मुझे रिझाता ।

हँसी खेल का पुतला बड़ा हठीला, बहुत निराला ।

छलका करता है जिसके अलवेलपन का प्याला ।

जिसकी भूल भली लगती है, जो है भोला-भाला ।

वह है कौन ? क्या बता दूँ मैं, वह है मेरा लाला ।

माता पिता की ममता

७३

चाह

बना रहे पानी मोती-मा ।

चमक दमक प्यारी दिखलाओ ।

अपने मुंह की लाली रखकर ।

लाल ! लाल जैसे बन जाओ ।

तितली-जैसी रखो रंगतें ।

बड़ी निराली ललकें पाओ ।

भौरों सा रंग श्याम रंग में ।

गूँज-गूँज न्यारे गुण गाओ ।

हरा-भरा रह पेड़ों जैसा ।

सदा बड़े सुन्दर फल लाओ ।

रहो चहकते चिड़ियों जैसा ।

कोयल की-सी कूक सुनाओ ।

प्यार-छांह में पल-पल करके ।

कभी किसीका दिल मत छीलो ।

रहै चाँद सा हँसता मुखड़ा ।

प्यार छलकता प्याला पी लो ।

७४

माता पिता की ममता

चन्दा मामा ।

मेरे प्यारे बड़े दुलारे ।

ऐ मेरी आँखों के तारे ।

आ मैं तेरा जी बहलाऊँ ।

तुझे अनूठी बात बताऊँ ।

जो है दूध-समुद्र कहाता ।

कहीं उसी से लक्ष्मी माता ।

प्यारा चन्द चांदनी वाला ।

उसमें से ही गया निकाला ।

इसी लिये दोनों मन भाये ।

जग में भाई-बहन कहाये ।

जगत-पिता जो माना जाता ।

वह लक्ष्मी-पति है कहलाता ।

इस नाते हैं सभी उमगते ।

चन्दा को मामा हैं कहते ।

माता पिता की ममता

७५

है वह जगमग जगमग करता ।

उससे है झर-झर रस झरता ।

जो है उससे ज्योति निकलती ।

दिये की तरह वह है बलती ।

तेरी आंखों पर है खिलती ।

तेरे मुखड़े से है मिलती ।

तुझे चूमती ही रहती है ।

दूध धार जैसी बहती है ।

रंग निराले दिखलाती है ।

छिटक धरा पर छवि पाती है ।

क्या तू उसे हाथ में लेगा ।

क्या इससे मिलकर खेलेगा ।

आ रे चन्दा मामा, आ जा ।

लाल को खिला फूल बना जा ।

लाड़ प्यार ।

पद

बतला दूँ तू क्या है लाल ।

सुन्दर बड़े विलोचन वाला लोक विमोहन वाल ।

चन्द समान सलोना मुखड़ा है नयनों का माल ।

है गुलाब से कहीं फवीला तेरा गोरा गाल ।

तुतली तुतली प्यारी बातें हैं कर रहीं निहाल ।

क्यों न निछावर कर दूँ तुझ पर हीरा मोती लाल ।

गोदी भरे लाल ।

मिला मोल का पतान जिनके ।

वे अनमोल लाल होते हैं ।

मोद कमल उपजाने वाले ।

रस से भरे ताल होते हैं ।

बड़े भाग वालों के घर के ।

मोती भरे थाल होते हैं ।

कितनी ही आंखों के तारे ।

गोदी भरे लाल होते हैं ।

माता पिता की ममता

७७

पुतले ।

बहुत रिझाते हैं मुसकाकर ।

मन के गीत सुनाते ।

ठुमक ठुमक कर नाच नाच कर ।

किस को नहीं लुभाते ।

बोल बोल कर तुतली बोली ।

कहलाते हैं तुतले ।

हँस कर किसको नहीं हँसाते ।

हँसी खेल के पुतले ।

नया खिलौना

जब मैं हँस हँसे तब वह भी जब गाऊं तब गावे ।

जब मैं ताता थोड़े नाचूं तब वह बाद्य बजावे ।

जब मैं किलकूं तब वह किलके जब बोलूं तब बोले ।

मीठी बोली से मुझ सा ही वह भी मिसरी धोले ।

मुसका मुसका मेरे जैसा रस की सोत बहावे ।

खिलता मुझे देख कर वह भी फूलों सा खिल जावे ।

बाबा मेरी बातें सुन लो जब बजार में जाना ।

मेरे साथ खेल सब खेले वही खिलौना लाना ।

नट खट बालक ।

घर में घुस कर ऊधम करता बछड़े खोल भगाता ।

लगा लगा मुंह थन से पय गायों का है पी जाता ।

है लड़कों का कान ऐंठता चपतें उन्हें लगाता ।

कभी बन्दरों सी घुड़की दे दे है उन्हें डराता ।

ऐंठ ऐंठ बातें करता है भौहें है मटकाता ।

कभी अँगूठा दिखलाता है मुंह है कभी चिढ़ाता ।

आँख चुराता ही रहता है छीन छीन मन मेरा ।

अरी यशोदा माता सुन ले नट खट बालक तेरा ।

थोपी मार गया लड़कों को काट चिकोटी उन्हें रुलाया ।

चिढ़ा गया उँगलियां नचा कर बन्दर सा किलकिला डराया ।

घर में घुस कर धूम मचाई छीन ले गया सई तागा ।

कैसा है यह नट खट लड़का दौड़ कान में दू कर भागा ।

६ विविध-विषय

बड़े की बड़ा ।

जो है हमें बनाने वाला ,
उसका है सब काम निराला ।

देखो आसमान के तारे ।
कितने हैं आंखों के प्यारे ।

कोई नीला कोई पीला ।
कोई उजला औ चमकीला ।

देखो सूरज को है कैसा ।
चांदी का गोला हो जैसा ।

कैसा प्यारा चाँद बनाया ।
जिसने देखा वही लुभाया ।

ठंडी ठंडी हवा बहाई ।
जो पेड़ों में होकर आई ।

यह पानी जो पीने का है ।
कितना अच्छा औ मीठा है ।

कर देती है आग हमारा ।
काम पका देने का सारा ।

जो यह मिट्टी है दिखलाती ।
कितने कामों में है आती ।

रंग रंग के फूल खिलाये ।

जिनके ऊपर भौर लुभाये ।

बड़ा अनूठा औ मन भाया ।

चिड़ियों को गाना सिखलाया ।

हरे भरे पत्ते औ डाली ।

पेड़ों को दी है हरियाली ।

तुम्हें उसी ने आँखें दी हैं ।

जिन पर पलकें लगी हुई हैं ।

कान दिये औ नाक बनाई ।

जीभ उसी से तुमने पाई ।

हाथ पाँव औ बदन तुम्हारा ।

है उसका ही रचा सँवारा ।

लड़को तुम उसका गुन गाओ ।

उसको पूजो, उसे मनाओ ।

इससे होगा भला तुम्हारा ।

पावोगे दुख से छुटकारा ।

विविध-विषय

८३.

विनय ।

प्रभु ! हम सब हैं बालक तेरे ।

गुण गाते हैं साँझ सवेरे ।

तू दे आँखें खोल हमारी ।

जी में जोत जगा दे न्यारी ।

फूल झड़ें जब मुंह को खोलें ।

सबसे मीठी बोली बोलें ।

बातें जी की कली खिलावें ।

अमृत कानों में बरसावें ।

चाल हमारी होवे आला ।

करें अंधेरे में उँजियाला ।

भले काम कर नाम कमावें ।

ऊसर में भी कमल खिलावें ।

सबके बन जावें हम प्यारे ।

कहलावें आँखों के तारे ।

किसी का न रोआँ कलपावें,

पर हित कर फूले न समावें ।

२४

विविध-विषय

रंगत अपनी रखें निराली,
बन जावें फूलों की डाली ।

किसी बात में हों न कभी कम,
काँटों में से फूल चुनें हम ।

किसी का न जी कभी दुखावें ।
मसले फूल के न सुख पावें ।

सारी बिगड़ी बात बनावें ।
काँटे राहों में न बिछावें ।

चीज प्यार का उर में बोंवें ।
जाति के हितों पर बलि होवें ।

फूलें फलें सदा सुख पावें ।
हम माई के लाल कहावें ।

सवेरे के काम ।

छिप गये तारे, वही प्यारी हवा ।
खिल गई कलियाँ, सवेरा हो गया ।

छोड़ करके ऊँघना लड़को उठा ।
वह न पनपा इस समय जो सो गया ।

विविध-विषय

८५

शौच से आ, हाथ मुंह धोकर नहा ।

जी लगा जगदीश की पूजा करो ।

दीखती सब ओर है जिसकी कला ।

तेज से उसके हृदय का तम हरो ।

फिर बड़ी ही नम्रता से पास जा ।

चन्दना मां-बाप के पग की करो ।

भक्ति से ले धूल उनके पांव की ।

आँख में अपने मलो शिर पर धरो ।

ठीक रखने के लिये तन की कलें ।

नित्य ही थोड़ी बहुत कसरत करो ।

दूध पीकर या कि हलकी वस्तु खा ।

निज नसों में वायु फुरतीली भरो ।

तब करो वे काम जो हों सामने ।

पाठ करलो याद, या कपड़े पहन ।

जो हुआ हो पाठशाला का समय ।

तो वहां जाओ बना उत्फुल्ल मन ।

-८६

विविध-विषय

गिलहरी ।

कहते जिसे गिलहरी हैं सब ।

सभी निराले उसके हैं ढव ।

पेड़ों से नीचे है आती ।

फिर पेड़ों पर है चढ़ जाती ।

कुतर कुतर फल को है खाती ।

चच्चों को है दूध पिलाती ।

उसकी रंगत भूरी कारी ।

आँखों को लगती है प्यारी ।

होती है यह इतनी चंचल ।

कहीं नहीं इसको पड़ती कल ।

उछल कूद में है यह कैसी ।

दौड़ धूप में भी है वैसी ।

चैठी इस धरती के ऊपर ।

दोनों हाथों में कुछ लेकर ।

जब वह जल्दी से है खाती ।

तब है कैसी भली दिखाती ।

चिकना चिकना रोआं इसका ।

लुभा नहीं लेता जी किसका ।

विविध-विषय

८७

मत तुम इसको ढेले मारो ।

जी में इतनी बात विचारो ।

कहीं इसे जो लग जावेगा ।

तो इसका जी दुख पावेगा ।

अब तक सबने है यह माना ।

जी का अच्छा नहीं दुखाना ।

बन्दर ।

देखो लड़को ! बन्दर आया ।

एक मदारी उसको लाया ।

कुछ है उसका ढंग निराला ।

कानों में है उसके बाला ।

फटे पुराने रंग बिरंगे ।

कपड़े उसके हैं बेढंगे ।

मुंह डरावना आँखें छोटीं ।

लम्बी दुम थोड़ी सी मोटी ।

भरों कभी है वह मटकाता ।

आँखों को है कभी नचाता ।

ऐसा कभी किल किलाता है ।

जैसे अभी काट खाता है ।

दांतों को है कभी दिखाता ।

कूद फांद है कभी मचाता ।

कभी घुड़कता है मुंह बाकर ।

सब लोगों को बहुत डराकर ।

कभी छड़ी लेकर है चलता ।

है वह यों ही कभी मचलता ।

है सलाम को हाथ उठाता ।

पेट लेट कर है दिखलाता ।

ठुमुक ठुमुक है कभी नाचता ।

कभी कभी है टके मांगता ।

सिखलाता है उसे मदारी ।

जो जो बातें बारी बारी ।

वे सब बातें वह करता है ।

सदा उसी का दम भरता है ।

देखो बन्दर सिखलाने से ।

कहने, सुनने, समझाने से ।

त्रिविध-विषय

८९

बातें बहुत सीख जाता है ।

कई काम कर दिखलाता है ।

फिर लड़को, तुम मन देने पर ।

भला क्या नहीं सकते हो कर ।

वनो आदमी तुम पढ़ लिखकर ।

नहीं एक तुम भी हो बन्दर ।

— — —
कोयल ।

कालो कालो कू कू करतो ।

जो है डाली डाली फिरती ।

कुछ अपनी ही धुन में ऐंठी ।

छिपी हरे पत्तों में बैठी ।

जो पंचम सुर में है गाती ।

वह हो है कोयल कहलातो ।

जब जाड़ा कम हो जाता है ।

सूरज थोड़ा गरमाता है ।

तब होता है समा निराला ।

जी को बहुत लुभाने वाला ।

हरे पेड़ सब हो जाते हैं ।

नये नये पत्ते पाते हैं ।

कितने ही फल औ फलियों से ।

नई नई कोंपल कलियों से ।

भली भांति वह लद जाते हैं ।

बड़े मनोहर दिखलाते हैं ।

रंग रंग के प्यारे प्यारे ।

फूल फूल जाते हैं सारे ।

वसी हवा बहने लगती है ।

दिशा सब महकने लगती है ।

तब यह मतवाली हो होकर ।

कूक कूक डाली डाली पर ।

अजब समा दिखला देती है ।

सबका मन अपना लेती है ।

लड़को ! जब अपना मुंह खोलो ।

तुम भी मीठी बोली बोली ।

इससे कितने सुख पावोगे ।

सबके प्यारे बन जाओगे ।

जुगनू ।

चौपदे

लो पकड़ लड़को जुगनुओं का न तुम ।

हाथ में पड़ हैं मुसोबत खेलते ।

खेलते तुम लोग अपना खेल हो ।

वे विचारे जान पर हैं खेलते ।

तंग लड़को जुगनुओं को मत करो ।

ये तुम्हें अपना समझते काल हैं ।

साच लो तुम हो किसी के लाल तो ।

रात के गोदी भरे ये लाल हैं ।

 लुभावने फूल ।

कैसे फूल भला न लुभाते ।

आँखों को प्यारे हैं लगते, चित को हैं बेलमाते ।

बड़े रंगीले रस वाले हैं, हंसते नहीं अघाते ।

मुंह का खोल न जाने क्या कह फूले नहीं समाते ।

ए हैं सुखवि छलकते प्याले, जो कां कला खिलाते ।

भरे अनूठे भावों में, अलवेलपन में माते ।

छूते ही मैले होते हैं, टूटे हैं कुम्हलाते ।

लड़को ! इनको प्यार करो, तुम रहो निभाते नाते ।

तितली ।

रंग-विरंगी तितली आई ।

देखो है कैसी छावि पाई ।

उसका तन है कितना प्यारा ।

कैसा है वह गया संवारा ।

इधर उधर फिरती रहती है ।

फूलों पर गिरती रहती है ।

फूल उसे हैं बहुत लुभाते ।

अपना रस हैं उसे पिलाते ।

उसको अपनी छवि देते हैं ।

उसका मन उससे लेते हैं ।

दोनों हँसते हैं हिल-मिलकर ।

खेल खेलते हैं खिल-खिलकर ।

दानों ही हैं बड़े रंगीले ।

बड़े अनूठे, बड़े फवीले ।

दोनों हैं दोनों के प्यारे ।

दोनों हैं दोनों से न्यारे ।

लड़को तितली को न सताओ ।

उसका रोआँ मत कलपाओ ।

छूते ही मैली होवेगी ।
फूलों-सी रंगत खोवेगी ।

उसको देख देख सुख पाओ ।

चैसे ही सुन्दर बन जाओ ।

मेली बन कर मिले रहो तुम ।

फूलों जैसे खिले रहो तुम ।

— — —

चमकीले तारे ।

ये चमकीले तारे हैं ,

बड़े अनूठे प्यारे हैं ।

आँखों में बस जाते हैं ,

जो को बहुत लुभाते हैं ।

जग मग-जग मग करते हैं ,

हँस हँस मन को हरते हैं ।

खिले हुये फूलों-से हैं ,

जात के बलूलों-से हैं ।

— — —

नये जड़ाऊ गहने हैं ,

जिन्हें रात ने पहने हैं ।

कितने रंग बदलते हैं ,

बड़े दिये से बलते हैं ।

घर के किसी उजाले हैं ,

जोत जगाने वाले हैं ।

हीरे बड़े फवीले हैं ,

छवि से भरे छवीले हैं ।

कमी टूट ये पड़ते हैं ,

फलों जैसे झड़ते हैं ।

चिनगी सी छिटकाते हैं ,

छोड़ फुलझड़ी जाते हैं ।

विविध-विषय

१५

तारे ।

बिखरे मोती न्यारे हैं ,
 या चमकीले तारे हैं ।
 सुथरी नीली चादर पर ,
 सुन्दर फूल पसारे हैं ।
 किसी बड़ी अलवेली के ,
 बड़े छगीले प्यारे हैं ।
 या अँधियाली रातों को ,
 आँखों के ये तारे हैं ।
 नीले किसी चँदोवे में ,
 बूटे सजे सँवारे हैं ।
 या सुरमई बिछौने में ,
 टके अमोल सितारे हैं ।
 सरग बाग के पौदों के ,
 दमक रहे फल सारे हैं ।
 या है दहकी आंग कहीं ,
 फैल रहे अंगारे हैं ।
 दिये देवताओं के घर के ,
 जगते जोत सहारे हैं ।
 या आकाश विमानों पर ,
 बैठे देव दुलारे हैं ।

चन्द ।

रूप रंग दोनों में न्याग ,
तेरे मुखड़े जैसा प्यारा ।

है यह चन्द या किरस प्याला ,
या चांदी का थाल निराला ।

कोई बड़ा फूल है फूला ,
या है यह आईना भूला ।

जोति वेलियों का है बाया ,
या है यह आकाश का दीया ।

किसी सुन्दरी ने मुंह खोला ,
या है यह माखन का गोला ।

है यह गेंद किसी की खोई ,
या सुन्दर पतंग है कोई ।

किसी देवता का है छाता ,
कलस रुपहला है दिखलाता ।

या है यह चमकीला बूटा ,
या बैलून सरग से छूटा ।

क्या मैं बतला दूं, यह क्या है ,
एक कटोरा दूध भरा है ।

तेरा है अनमोल खिलौना ,
जिसमें बैठा है मृग छौना ।

चिड़ियाँ ।

चिड़ियाँ हैं लुभावनी होती ,

चढ़ो सजीली बहुत सँवारी ।

उनके पर हैं सुन्दर प्यारे ।

रखती हैं वे रंगत न्यारी ।

बड़े प्यार से उनको देखो ।

रीझ रीझ कर उन्हें रिझाओ ।

सुनो चहकना उनका चित से ।

उनकी चालों पर ललचाओ ।

जब वे हों पेड़ों पर गाती ।

उनसे गला मिलाकर गाओ ।

देख फुदुकना उनका फुदको ।

उमग पड़ो फूले न समाओ ।

वे हैं बड़ी भली फुरतीली ।

खुली हवा में रहने वाली ।

अपने रंग ढंग में झूबी ।

सुख लहरों में बहने वाली ।

उन्हें मत सताओ मत छेड़ो ।

वे न जाँय पिजरोँ में पाली ।

उनकी जाय न डाली छीनी ।

हरी-भरो, फल-फूलों वाली ।

जिनसे मसल जाय कोई दिल ।

ऐसे कामों से मुंह मोड़ो ।

धूल में मिला देने हो को ।

कोई फूल भी न तुम तोड़ो ।

काम की बातें ।

आंखें बदल बदल कर अपनी ।

बहँक-बहँक जो बहुत बकोगे ।

खुले हुये दिल से तो कैसे ।

साथ-साथ हँस खेल सकोगे ।

मुंह में बुरी बात जो आये ।

तो न भूल कर भी मुंह खोले ।

प्यार-भरा जी चिगड़ जायगा ।

बात बढ़ेगी बोली बोले ।

खींच बढ़ेगी खींच तान से ।

झूठ जायगी हित की ढोंगी ।

छीना-झपटी कमी करो मत ।

इससे छीछा लेदर होगी ।

अपने मतलब की बातों से ।

तुम्हें नहीं जो मिलती छुट्टी ।

तो जिसको हो बहुत चाहते ।

उससे करनी होगी कुट्टी ।

बात बात में छेड़ ह्वाड़ कर !

जी में किसी कुभाव भरो मत ।

हंसी खड़ा करती है झगड़े ।

हंसो-हंसाओ, हंसी करो मत ।

सब से मीठी बोली बोलो ।

मैली रखो न अपनी आँतें ।

जी में कड़वा पन भर देगी ।

कड़वे मुख की कड़वी बातें ।

जो निवाहना साथ तुम्हें है ।

तो पत साथी की न उतारो ।

भौंहे तान तान मत बहको ।

मत तानो मत ताना मारो ।

कभी चलो मत ऐसी चालें ।

जिससे संगी साथी छूटें ।

आँखों में आंसू भर आये ।

मोती की मालायें टूटें ।

— — —

फूल और तारे ।

दोनों ही हैं रंग विरंगे दोनों हैं छवि वाले ।
 दोनों ही हैं बड़े फवीले, दोनों बड़े निराले ।
 खिले हुए रहते हैं दोनों, दोनों हैं अलबेले ।
 किसी बड़े बाजीगर के हैं दोनों सुन्दर चेले ।
 आंखों की चोरी करते हैं दिल हैं छीने लेते ।
 दोनों हैं अपनाते रहते दोनों हैं सुख देते ।
 ए धरती के बड़े लाड़िले वे आकाश दुलारे ।
 दोनों ही हैं हँसते रहते दोनों ही हैं प्यारे ।

खेल ।

चित्त का चाव चौगुना होवे ।

लड़कों में उमंग भर जावे ।

बाप का कलेजा हो दूना ।

माता फूली नहीं समावे ।

हो पड़ोस में चहल पहल नित ।

बड़ा सुरीला होवे गाना ।

विविध-विषय

१०१

घर में बजें अनूठे बाजे ।

खुल जावे आनंद-खजाना ।

हरे-भरे पत्ते छवि पावें ।

रस से सिंचे सजीली क्यारी ।

नये नये फूलों के फूले ।

और फवीली हो फुलवारी ।

बागों में बसन्त आ जावे ।

धान लहलहाये खेतों में ।

रवे किसी चाही चीनी के ।

बिखर फैल जावें रेतों में ।

बारा जाय थाल मोतो का ।

खेल-कूद वाली थलियों में ।

करे चांदनी घर कोनों में ।

चाँद उतर आये गलियों में ।

जिन न्यारी लीलाओं के बल ।

उनकी लाल बलायें ले लो ।

जो दिखलायें कला निराली ।

ऐसे ही खेलों को खेलो ।

१०२

विविध-विषय

गुलाब का एक फूल ।

देख फूला एक फूल गुलाब का,
 तोड़ उसको एक लड़के ने लिया ।
 इस सितम को देख वाला फूल यों,
 यह अरे वे पीर ! तूने क्या किया ।
 क्या समझ सकता नहीं यह बात तू,
 धूल में मेरी मिली चाहें सभी ।
 आज तूने छीन जा मुझसे लिया,
 पा सकूंगा मैं न अब उसको कभी ।
 हंस न पाया था कि रोने की पड़ी,
 कुछ न देखा और आंखें बन्द कीं ।
 आह तेरे ही किये सब पंखड़ी,
 खिल न पाई थीं कि कुम्हलाने लगीं ।
 है समझता जीव मुझ में है नहीं,
 और दुख सुख भी नहीं होता मुझे ।
 भूल है यह, पंडितों से पूछ ले,
 भेद इसका वे बता देंगे तुझे ।

क्या हरी निज पत्तियों में मैं तुझे,
 छवि दिखाता था न, या भाता न था ।
 किस लिये फिर यों सताया मैं गया,
 जी न बहलाना तुझे यों चाहिये ।
 इस तरह क्या चाहिये करना बदी,
 कोट कुर्ते की सजावट के लिये ।
 है भला किस काम का, पत्थर पड़ें,
 दूसरों को पीस कर जो सुख मिले ।
 आग कल लगते अभी उसमें लगे,
 और का दुख देख जो मुखड़ा खिले ।
 झूठ हो डंठी खड़ी है रो रही,
 मैं कलपता हूँ कलेजा थाम कर ।
 कुछ घड़ी में पंखड़ी नुच जायगी,
 धूल पर मैं लोटता हूँगा बिखर ।
 अब मिलेंगीं वे न प्यारी पत्तियाँ,
 जो गले लग प्यार दिखलातीं रहीं ।

१०४

विविध-विषय

वे अनूठी डालियां फूलों भरी,

गोद में जब ले खिलायेंगी नहीं ।

वे हमारे संग वाले फूल सब,

पास बैठे जो कि जाते थे खिले ।

अब हमें देंगे दिखाई भी नहीं,

हम रहे जिनसे बहुत दिन तक हिले ।

चूम जायेंगी न आ आ तितलियां,

गीत भौरे भी सुनायेंगे न गा ।

कौन देखेगा हमारी ओर अब,

चौगुनो चाहें भरी आँखें लगा ।

वह बड़ा सुन्दर सबेरे का समां,

जब कि मैं जी खोल करके था खिला ।

अब नहीं मैं देख पाऊंगा कभी,

आह मैं किससे करूं इसका गिला ।

कौन है दुख दूसरों का जानता,

निज सुखों में सब सदा भूला रहा ।

विविध-विषय

१०५

मर मिटे कोई बला से मर मिटे,

कब न मानव रुचि तरंगों में बहा ।

है जनम तेरा उसी कुल में हुआ,

है बड़प्पन का जिसे दावा बड़ा ।

पर आ क्या, आज तेरे हाथ से,

एक को यों ही सभी खोना पड़ा ।

बीतती जो आज तुझ पर इस तरह,

तो समझ सकता पराई पोर तू ।

जो लगा होता तुझे, तो और को,

मार सकता था नहीं यों तीर तू ।

जो कि होना था हुआ मैं इस लिये,

अब नहीं कुछ और कहना चाहता ।

पर तुझे यह बात बतलाये बिना,

है नहीं मन भी हमारा मानता ।

जी बिना मैं हूँ नहीं, जड़ मैं न हूँ,

दुख दरद से भी बचा हूँ मैं नहीं ।

२०६

विविध-विषय

तोड़ लेना इस लिये यों ही मुझे, -

है बहुत से पाप से बढ़ कर कहीं ।

दूर करने के लिये दुख और का,

लोक के हित में लगाने के लिये ।

फूल पत्ते तुम भले ही तोड़ लो,

देवताओं पर चढ़ाने के लिये ।

पर कभी यों ही उन्हें मत तोड़ना,

है बुरा यह और निठुराई निरी ।

किस लिये हो और पर ढाते विपत्त,

हो न सहते आँख की जब किरकिरी ।

क्यों मुझी पर इस तरह जी आ गया,

फूल फूले हैं यहाँ पर तो सभी ।

क्या कहें, किससे कहें, कैसे कहें,

रूप गुण भी पीस देता है कभी ।

कुछ बूँदियाँ ।

थी बरसना चाहती छाई घटा,
 किन्तु तो भी थी बहुत बूँदें अड़ी ।
 वे तरह उनमें मची थी खल बली,
 देख यह कुछ बूँदियाँ यों कह पड़ीं ।
 किस लिये वहनो ! वतादो हो अड़ी,
 तुम सबों ने क्यों गंवा साहस दिया ।
 क्या कहेंगे लोग जी में सोच लो,
 जो न धरती को बरस कर तर किया ।
 है यहाँ मिलती बड़ी सुथरी हवा,
 है यहाँ कुछ और ही नभ की छटा ।
 क्याम रंगत की बड़ी मन मोहिनी,
 बादलों की है यहाँ बाँकी अटा ।
 खूब चंचल दौड़ने वाली बड़ी,
 जो बहुत ही हम सबों से है हिली ।
 घूमती दिन रात हैं जिस पर चढ़ी,
 मन चली घोड़ी हवा की है मिली ।

१०८

विविध-विषय

साड़ियाँ देती पिन्हा हैं सत रंगी,

सामने पड़ रंग विरंगी रधि किरन ।

चित्त किसका मोह जाता है नहीं,

देख कर जिनकी बड़ी न्यारी फवन ।

हैं यहाँ पर मिल रहे सुख नित नये,

पर न तब भी आपदा सकती है टल ।

हैं डरा देते गरज कर के जलद,

कौंध कर बिजली बनाती है विकल ।

फिर सहमना हो नहीं सकता भला,

जोहती हैं हम सबों का सुख धरा ।

पा हमें पौधे बड़े होंगे सुखी,

कितने ही सूखा वदन होगा हरा ।

है वहाँ पर भी नहीं सुख को कमी,

फूल खिल कर गोद में लेंगे हमें ।

मोतियों को सी दमक दिखलायेंगे,

नोक पर तृण की हमारे कण थमें ।

विविध-विषय

१०९

जो नहीं हम सब दिखायेंगी दया,
 हो सकेगा किस तरह शीतल अचल ।
 बढ़ सकेंगी किस तरह नदियां घटो,
 सूखता सर किस तरह होगा सजल ।
 प्यास धरती की बुझेगी किस तरह,
 कर सकेगा ऊसरों को कौन तर ।
 जी सकेंगी ये बिचारी दूध क्यों,
 चातकों की किस तरह होगी बसर ।
 है सदा से ही जगत की रीति यह,
 काम एक से दूसरे का है चला ।
 भूमि वालों की मलाई के लिये,
 धूल में मिल जाय तो भी है मला ।
 काम इतनी बात से ही हो गया,
 भर भरा कर साथ सब बू'दें गिरीं ।
 हो गई आनन्द-मय सारी धरा,
 मोद की सब ओर ढौंड़ी सी फिरी ।

११०

विविध-विषय

फूल और काँटा ।

हैं जनम लेते जगह में एक ही,
 एक ही पौधा उन्हें है पालता ।
 रात में उन पर चमकता चाँद भी,
 एक ही सी चाँदनी है डालता ।
 मेह उन पर है बरसता एक सा,
 एक सी उन पर हवायें हैं बही ।
 पर सदा ही यह दिखाता है हमें,
 ढंग उनके एक से होते नहीं ।
 छेद कर काँटा किसी की उंगलियां,
 फाड़ देता है किसी का वर वसन ।
 प्यार-झूबी तितलियों का पर कतर,
 भौर का है वेध देता श्याम तन ।
 फूल लेकर तितलियों को गोद में,
 भौर को अपना अनुठा रस पिला ।
 निज सुगंधों औ निराले रंग से,
 है सदा देता कली जी की खिला ।

विविध-विषय

१११

है खटकता एक सब की आँख में,
 दूसरा है सोहता सुर शीश पर ।
 किस तरह कुल की बड़ाई काम दे,
 जो किसी में हो बड़प्पन की कसर ।

चुगली ।

बुरा है, औ है हलका पन,
 छिछोरे पन का है बाना ।
 खुला मैला पन है जाँ का,
 नीच पन है चुगलो खाना ।
 अंधेरे को पाकर के ही,
 खोलता पर है चिमगादड़ ।
 समझ के अंधेपन में ही,
 बेलते हैं चुगले पापड़ ।
 दांव के लग जाने पर ही,
 काम कर जाती है चुगली ।

११२

विविध-विषय

नहीं तो रलटे दाँत तले,

दावनी पड़ती है उंगलो ।

गिरा हम क्यों न आँख से दें,

दूसरों को चुगली खा कर ।

पर चलेगी कब तक सोचो,

नाव कागज की पानो पर ।

फुंसादें क्यों न जाल में ही,

तुम्हारी चुगली का दाना ।

तुम्हें भी जान पड़ेगा तब

पड़ेगा जब मुँह की खाना ।

चुगलियां कर लथेड़ करके,

किसी को हमने क्या पाया ।

लगा कर मरदीने धौलें,

हमें जो नीचा दिखलाया ।

और की चुगली करने को,

कुराहों में जो पांव जमें ।

पछाड़ा हमने क्या उसको,

उसी ने लिया पछाड़ हमें ।

पीठ पीछे जो मुँह खोले,
 कौन उसका सा है ढोंगी ।
 चला कर छिप करके चोटें,
 सामने आँखें क्यों होंगी ।
 और की पत उतारने के,
 काम में चुगली आती है ।
 मगर पत ऐसे लोगों की,
 उतर पहले ही जाती है ।
 जब कि वे मन के रोगों से,
 बने ही रहते हैं रोगी ।
 तब भला चुगले लोगों का,
 क्यों न मिट्टी पलीद होगी ।

११४

विविध-विषय

हलका पन ।

सुनो जो से बातें मेरी,

न देखो वंटने पावे मन ।

बताये देता हूँ तुमको,

किसे कहते हैं हलका पन ।

तनिक सी हवा लगे से ही,

डोल जाता है तिनका-तन ।

इस लिये थोड़ी बातों में,

बिगड़ पड़ना है हलका पन ।

फूँक के लग जाने पर ही,

चंग जाता है भू आ बन ।

किसी के बात फेंकने पर,

बहक जाना है हलका पन ।

मान मरजादा से भारी,

भलों कब हो सकता है धन ।

विविध-विषय

११५

किसी को दम-झाँसा देकर,

मूँड़ लेना है हलका पन ।

एक दो हलकी पेचक से,

पतंगें ही जाती हैं तन ।

चार पैसा हो जाने पर,

तने फिरना हैं हलका पन ।

दूध के दूहे जाने पर,

वह नहीं रह जाता है थन ।

दूसरों से दुखड़ा कह कर,

भरम खोना है हलका पन ।

थिर नहीं रह सकता यक दम,

हिला ही करता है छन छन ।

जीम को पीपल का पत्ता,

बना लेना है हलका पन ।

बिनौलों के कढ़ जाने पर,

रहा रुई का वह न वजन ।

११६

विविध-विषय

भेद की या निज की बातें,

बता देना है हलका पन ।

तौल कर देखो, क्यों होगा,

अदब सा भारी ओछा पन ।

बड़े बूढ़ों से भिड़ जाना,

बहस करना है हलका पन ।

नहीं मुंह में डाला जाता,

गिर गया है मुंह से जो कन

दे दिया गया किसी को जो,

उसे रखना है हलका पन ।

 मीठी बोली ।

बस में जिससे हो जाते हैं प्राणी सारे ।

जन जिससे बन जाते हैं आंखों के तारे ।

पत्थर को पिघला कर मोम बनाने वाली ।

मुख खोलो तो मीठी बोली बोलो प्यारे ।

रगड़ों झगड़ों का कड़वापन खोने वाली ।
 जी में लगी हुई काई को धोने वाली ।
 सदा जोड़ देने वाली है टूटा नाता ।
 मीठी बोली प्यार बीज है बीने वाली ।
 कांटों में भी सुन्दर फूल खिलाने वाली,
 रखने वाली कितने ही मुखड़ों की लाली,
 निपट बना देने वाली है बिगड़ी बातें,
 होती है मोठी बोली करतूत निराली ।
 जो उमगाने वाली, चाह बढ़ाने वाली,
 दिल के पेचीले तालों की सच्ची ताली,
 फैलाने वाली सुगंध सब आंर अनूठी,
 मीठी बोली है बीछे फूलों की डाली ।
 बह जाता है उरों बीच सुन्दर रस-सोता,
 प्यारा बनता है बन बसने वाला तोता,
 बुझ जाती है बैर-फूट की आग धधकती,
 मीठी बोली से है जन पर जादू होता ।

११८

विविध-विषय

कुल दीपक ।

चौपदे

जो कुल दीपक बनना है तो ,
बान भली बातों की ढालो ।

आंख खोल कर भले-बुरे को ,
सोचो, समझो, देखो भालो ।

भरा हुआ जो अँधियाला है ,
उसको ज्योति जगा कर टालो ।

दीपावली समान हृदय में ।
देश-प्रेम का दीपक वालो ।

शिक्षा ।

बालको सब दिन फूला फूला ।
आंखों के तारे बन जाओ उर पलने में पलो ।
जीतो दांव फेंक हित पांसे पांव रोप न टलो ।
रँगो जाति हित की रंगत में भले ढंग में ढलो ।
भारत माता के सपूत बन पूत पंथ पर चलो ।
करो अंधेरा दूर घरों का दीपक जैसा जलो ।

हिन्दी - साहित्य - कुटीर वाराणसी द्वारा प्रकाशित पुस्तकें

आधुनिक हिन्दी-साहित्य का इतिहास

इसमें भारतेन्दु बाबू हरिश्चंद्र जी से लेकर आज तक का पूरा-पूरा हिन्दी साहित्य का इतिहास है ।

पुस्तक में पुराने ढंग की ब्रजभाषा, खड़ी बोली और छायावाद की कविताओं का पूर्ण विवेचन एवं उनकी प्रवृत्तियों का यथावत् निरूपण तथा नाटक, उपन्यास, कहानी आदि का पर्यालोचन आधुनिक शैली में किया गया है ।

काशी-नागरी प्रचारिणी सभा ने सं० १९९१ की इसे सर्वश्रेष्ठ पुस्तक मानकर लेखक को 'द्विवेदी स्वर्ण पदक' पुरस्कार में दिया है ।

मूल्य ४।=)

हिन्दी दासबोध

जिस तरह उत्तर भारत में गोस्वामी जी की रामायण का प्रचार राजा से लेकर रंक की भोपड़ी तक है, उसी तरह इस पुस्तक का प्रचार दक्षिण भारत में है । भगवान तिलक ने 'दासबोध' को संसार के सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थों में माना है । सजिल्द पुस्तक का मूल्य ३)

हिन्दी ज्ञानेश्वरी

महाराष्ट्र प्रान्त के प्रसिद्ध महात्मा श्रीज्ञानेश्वर जी ने भक्तों को भगवद्गीता का वास्तविक मर्म समझाने के लिए शंकराचार्य के मतानुसार 'ज्ञानेश्वरी' नामक बहुत ही विद्वत्तापूर्ण और विशद टीका लिखी है । जितनी गीता पर टीकाएँ आज तक निकली हैं उनमें यह सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है ।

मूल्य ५)

छप गया

दूसरा संस्करण भी

छप गया

प्रामाणिक हिन्दी कोश

(सम्पादक—श्री रामचन्द्र वर्मा)

इस कोश के सम्पादक के नाम से ही इसकी उत्तमता सिद्ध होती है। श्री वर्मा जी इस विषय के भारत में एक ही विद्वान हैं। हम दावे के साथ कहते हैं कि हमारा कोश सर्वश्रेष्ठ कोश है और इस ग्रंथरत्न ने हिन्दी का मस्तक उन्नत किया है तथा दूसरा कोई शब्दकोश इसकी बराबरी नहीं कर सकता।

इस कोश में हजारों नए शब्द, हजारों नई व्याख्याएँ और हजारों नए अर्थ मिलेंगे। यह कोश—पाठक, विद्यार्थी, लेखक, कवि, पत्रकार, शिक्षक, राजकीय, न्याय तथा शासन विभाग के अधिकारी—सभी के काम का है। शासन, न्याय तथा राजनीति के हजारों ऐसे शब्द तथा उनके अर्थ आपको इस कोश में प्राप्त होंगे जिनका अन्य कोशों में एकदम अभाव है। यह कोश हिन्दी के प्रचलित मुहावरों के समावेश से तो और भी उपादेय हो गया है। कोश के अन्त में अँगरेजी जाननेवाले लोगों के लिए एक बृहत् ५००० शब्दों की अँगरेजी-हिन्दी शब्दावली भी दी गई है जिससे लोग जान सकें कि अँगरेजी के किस शब्द के लिए हिन्दी में किस शब्द का प्रयोग होना चाहिए। हिन्दी के प्राचीन तथा आधुनिक कवियों द्वारा प्रयुक्त हजारों नए-नए शब्द, प्रयोग, विवरण, अर्थ, मुहावरे इसी कोश में मिलेंगे जो अन्य कोशों में नहीं हैं। वास्तव में यह कोश अद्वितीय और अनुपम है।

यह कोश डिमाई अठपेजी साइज में मोटे कागज पर छपा है तथा १६१६ पृष्ठों में समाप्त हुआ है। सुन्दर गेट-अप तथा पक्की मजबूत जिल्द के साथ कोश का मूल्य (१२।।) है।

मिलने का पता—

हिन्दी-साहित्य-कुटीर, वाराणसी - १



आम
भारतनि